समुद्र तट पर

ओ.वी. विजयन

चित्राँकन: स्वप्न सरकार

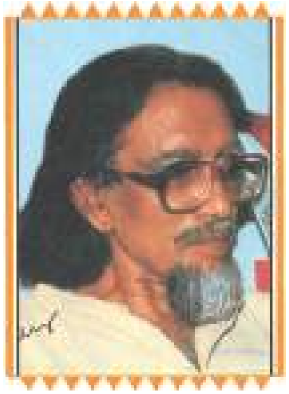

ओ.वी. विजयन

श्री ओ.वी. विजयन मलयालम भाषा के जाने-माने लेखक हैं। उनका पहला उपन्यास *ख़ज़ाकिन्टे इतिहासम* साहित्य जगत की सशक्त कृति माना जाता है। उन्हें 1991 में उनकी रचना *गुरु सागरम्* के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। श्री विजयन अपनी लघु-कथाओं में भी शासन द्वारा जनता पर किये जा रहे अत्याचार पर चोट करने से नहीं चूकते। सरल भाषा द्वारा वे मनुष्य की भावनायें उजागर कर देते हैं। *समुद्र तट पर* भी इन्हीं भावनाओं में डूबी एक कहानी है।

KATHA

पहला संस्करण 1997, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1997
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-55-7

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।
ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

समुद्र तट पर

लेखक

ओ.वी. विजयन

चित्राँकन

स्वप्न सरकार

(मूल मलयालम भाषा से अनूदित व रूपांतरित)

कथा, नई दिल्ली

वेलायी-अप्पन की यात्रा शुरू हुई। उनकी झोंपड़ी से रोने-चिल्लाने की आवाज़े आने लगीं। वेलायी-अप्पन कन्नूर जा रहे थे। गाँव-भर में शोक छाया हुआ था। अगर गाँववालों के बस में होता, तो सब उनके साथ जाते। अब जैसे वे अकेले ही पूरे गाँव के लिए यात्रा कर रहे हों।

पीछे से रोने की आवाज़ें कम होने लगी थीं। मेंड के बाद उन्हें चारागाह पार करना था। वहाँ से पगडंडी शुरू होती थी। पगडंडी के दोनों ओर ताड़ के पेड़ थे।

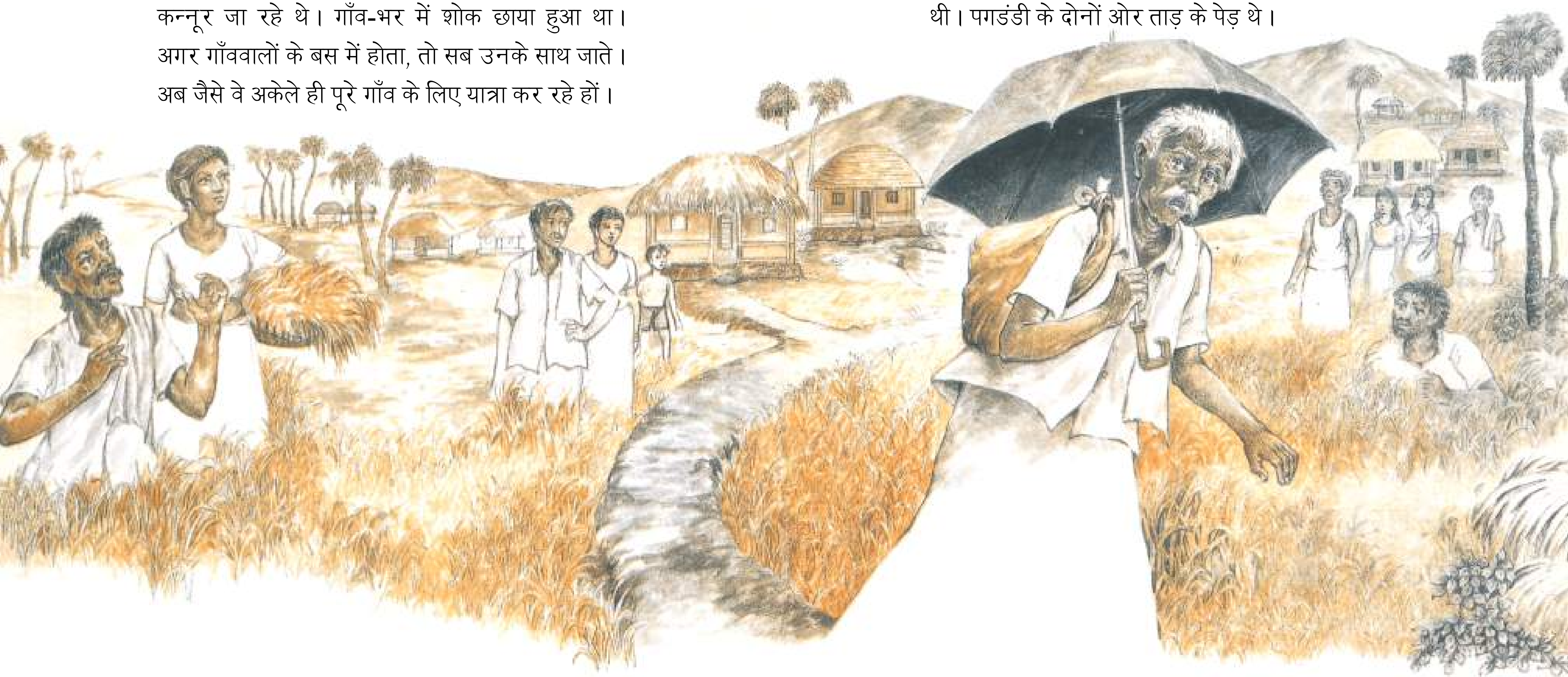

रेलवे-स्टेशन वहाँ से चार मील दूर था।

वेलायी-अप्पन अंतिम झोंपड़ी को पार कर, धान-खेतों की मेंड पर चल रहे थे।

वेलायी-अप्पन के कंधे पर झूलती पोटली में गूंधा हुआ चावल था। उसका पानी, पोटली को भिगोता हुआ, उनकी बाँह को भिगो रहा था। उनकी पत्नी ने देर तक उसे गूंधा था। दही के साथ, उसमें उनके आँसू भी मिले थे।

सामने से कुट्टीहसन आ रहे थे। आदर सहित रास्ता देते हुए, वे एक तरफ़ हो गये।

"वेलायी," कुट्टीहसन बोले।

"कुट्टीहसन," जवाब में वेलायी-अप्पन ने कहा।

केवल दो शब्द। बस, दो नाम। पर मानों एक लम्बी बातचीत। जिसमें विलाप भी था और सांत्वना भी।

ओ कुट्टीहसन, उन अनकहे शब्दों ने कहा, मुझे तुम्हारा कर्ज़ चुकाना है।

इस यात्रा के दौरान, उस कर्ज़ को अपने दिल का बोझ न बनाओ, ओ वेलायी।

कुट्टीहसन, इस यात्रा के बाद शायद, मैं कभी भी तुम्हारा कर्ज़ न चुका सकूँ।

जैसी पैगम्बर की इच्छा! इस यात्रा में, वही तुम्हारी रक्षा करेंगे।

वेलायी-अप्पन आगे बढ़े। आगे जाकर पगडंडी कच्ची सड़क से मिल गई थी। फिर कच्ची सड़क नदी में जा उतरती थी। वेलायी-अप्पन, नदी में उतर गये। उसकी विशालता को देख, उनका दिल भर आया।

उन्हें वह दिन याद आया जब उन्होंने इसी नदी में, अपने पिता के शव को नहलाया था। और जब उनके बेटे ने इसी नदी की लहरों में, पहली बार तैरना सीखा था। ये सब याद कर, उनकी आँखें गीली हो गईं।

थोड़ी देर के लिए वे नदी-किनारे रुक गये।

नदी के पार, थोड़ी ऊँचाई पर, घास के मैदान के पास ही था - रेलवे-स्टेशन। रेलवे-स्टेशन पहुंचते ही वे टिकट-खिड़की पर गये। बड़ी सावधानी से, कपड़े के कोने पर पड़ी गाँठ को खोला। उसमें से यात्रा के लिए पैसे निकाले।

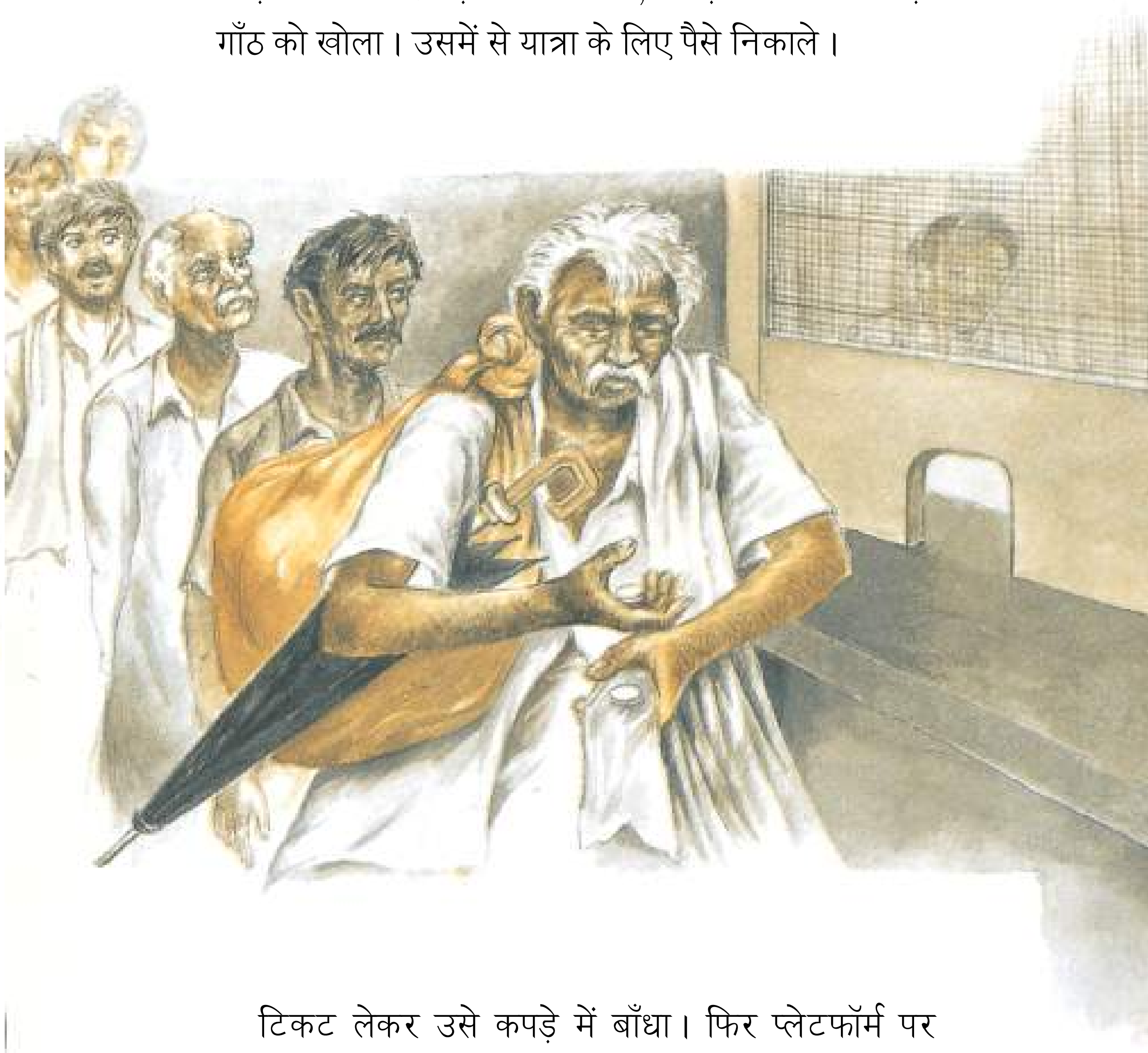

टिकट लेकर उसे कपड़े में बाँधा। फिर प्लेटफॉर्म पर एक बेंच पर बैठकर, रेलगाड़ी का इंतज़ार करने लगे। थोड़ी देर में, एक बुजुर्ग यात्री उनकी बगल में आकर बैठ गये।

"क्या आप कोयम्बतूर जा रहे हैं?" अजनबी ने पूछा।

"कन्नूर," वेलायी-अप्पन ने जवाब दिया।

"मैं कोयम्बतूर जा रहा हूँ।"

"अच्छा?"

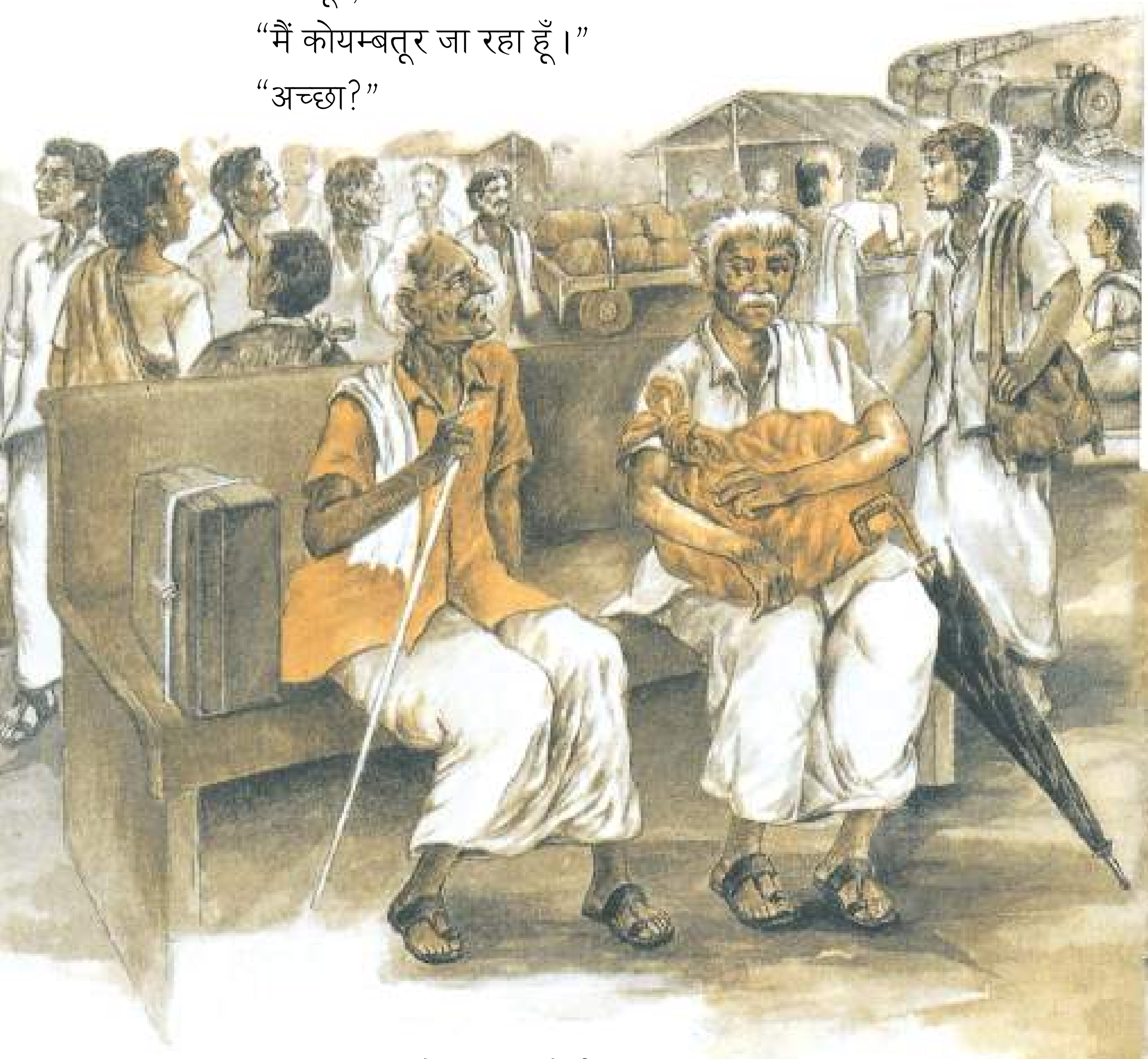

"आप कन्नूर में क्या करते हैं?"

"कुछ खास नहीं।"

"तो क्या केवल घूमने ही जा रहे हैं?"

अजनबी की ये बातें, वेलायी-अप्पन के गले पर फाँसी के फंदे जैसे झूलने लगीं। जब एक बार अपना गाँव छोड़ उस लम्बी मेंड को पार कर, आना हो जाता है तो सारी दुनिया, इन्हीं अजनबियों से भरी हुई लगती है। और उनके शब्द, करोड़ों फाँसी के फंदे।

कोयम्बतूर जाने वाली रेल आ गई। अजनबी उस पर चढ़ कर चला गया।

वेलायी-अप्पन बेंच पर अकेले रह गये। चावल की पोटली को खोलने की इच्छा न हुई। उस पर हाथ फेरकर केवल, उसके गीलेपन को महसूस किया। थोड़ी देर बाद उनकी आँख लग गई। सपना देखा और चिल्ला पड़े, "कनदुण्णी, मेरे बेटे!"

तभी रेल की आवाज़ से उनकी आँख खुली। वे हड़बड़ाकर उठे। कपड़े में बंधे टिकट पर हाथ फेरा। और भीड़ में रास्ता बनाते हुए, आगे की ओर बढ़े।

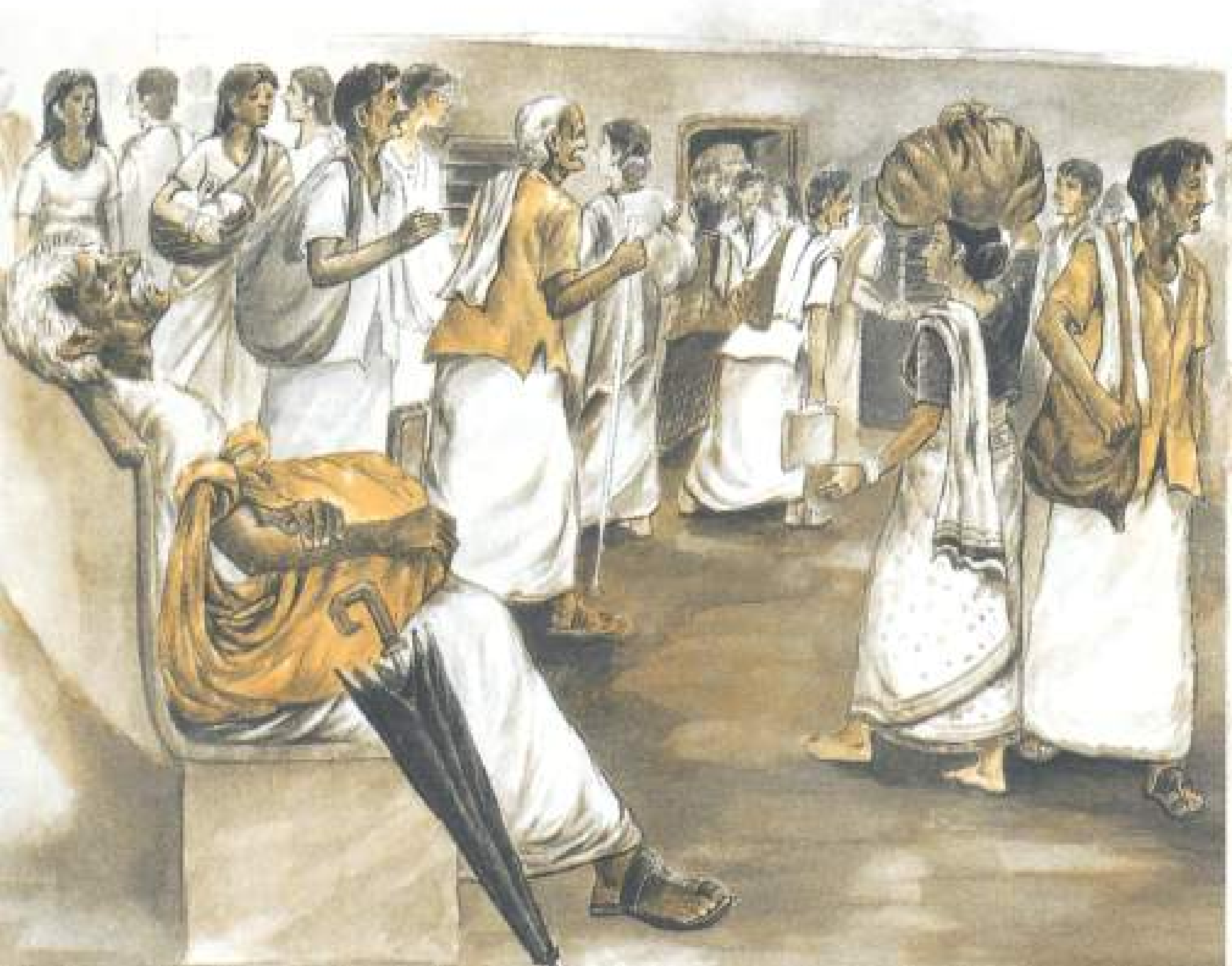

"यह प्रथम श्रेणी है, बाबा।"

"ओह! अच्छा?"

उन्होंने दूसरे डिब्बे में झाँक कर देखा।

"यह आरक्षित है।"

"अच्छा?"

"आगे चले जाओ, बाबा।"

अजनबी आवाज़ें।

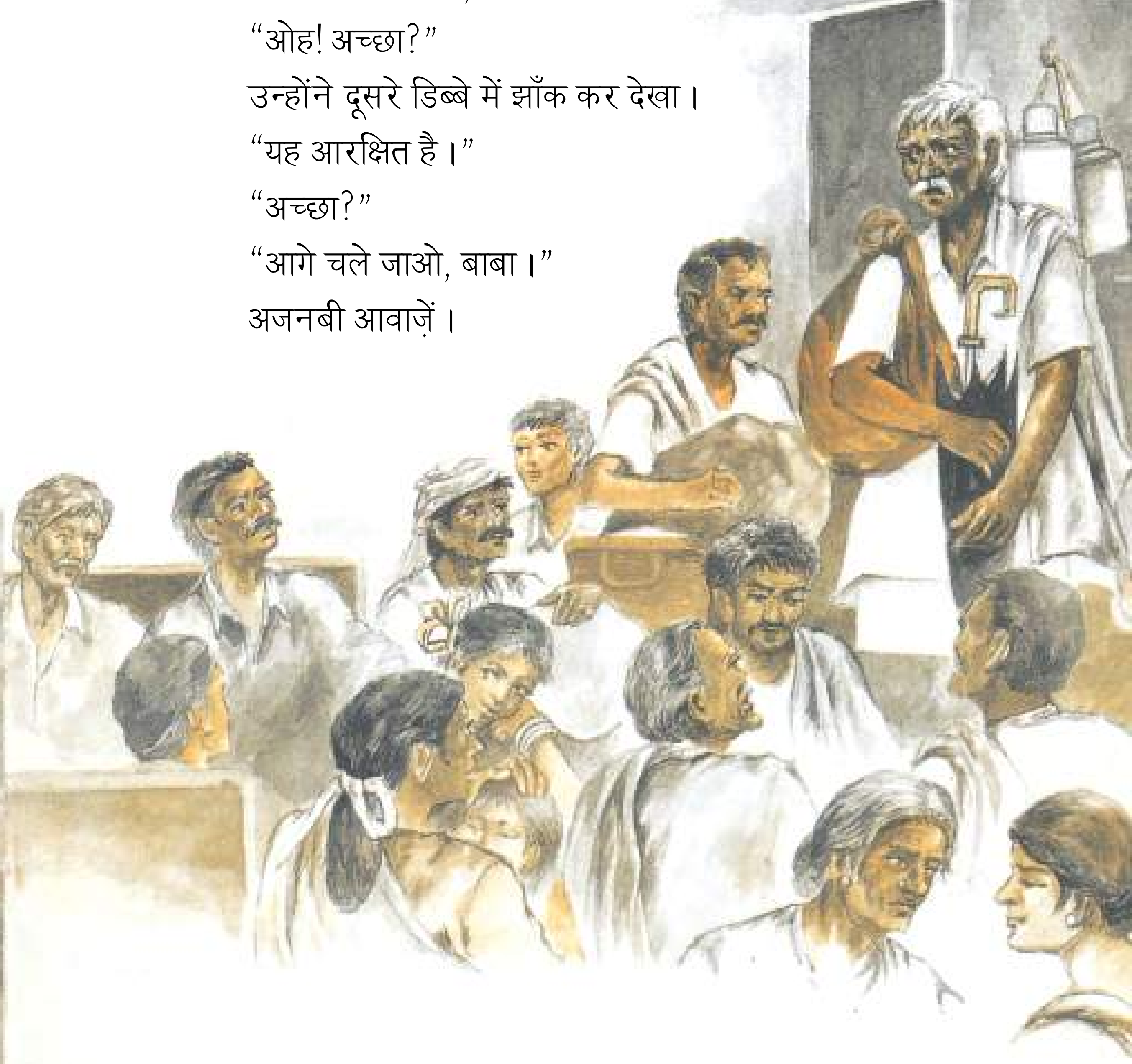

फिर वेलायी-अप्पन, एक डिब्बे में चढ़ गये। उसमें बैठने के लिए, कोई जगह खाली न थी। मैं खड़ा ही ठीक हूँ। सोने की ज़रूरत नहीं है। आज रात, मेरा बेटा जाग रहा होगा।

जब वे कन्नूर पहुँचे, तब सुबह नहीं हुई थी। गूंधे हुए चावल की पोटली, अभी भी उनके कंधे पर लटक रही थी और अपना गीलापन छोड़ रही थी। वे स्टेशन से बाहर आये।

सूरज की पहली किरण से अंधेरा छंटने लगा था। एक तरफ़ कुछ घोड़ा-गाड़ी चालक, झुँड बनाकर बातें कर रहे थे। वेलायी-अप्पन ने उनसे पूछा, "जेल जाने के लिए कैसे जाना होगा?"

एक आदमी हँसा, "बूढ़ा सुबह-सुबह जेल का रास्ता पूछ रहा है।" एक अन्य आदमी भी हँसा, "बाबा, ज़्यादा कुछ नहीं करना। थोड़ी चोरी कर लो, अपने-आप पहुँच जाओगे।" अजनबियों की इन बातों से, वेलायी-अप्पन का दम घुटने लगा।

फिर किसी ने उन्हें सही रास्ता बताया। वेलायी-अप्पन ने चलना शुरू किया।

जेल के पहरेदार ने उन्हें रोका, “इतनी सुबह यहाँ कैसे आना हुआ?”

वेलायी-अप्पन डर गये। धीरे-से कपड़े के कोने पर पड़ी गाँठ को खोला। उसमें से एक मुड़े-तुड़े, पीले-पड़े कागज़ के टुकड़े को निकाला। कागज़ पहरेदार को देते हुए बोले, “मेरा बेटा है, यहाँ।”

पहरेदार की नज़र उस कागज़ पर लिखे शब्दों से चिपक गई। उसका कठोर चेहरा, नरम पड़ गया।

“कल, न?” उसने सांत्वना देते हुए पूछा।

“मालूम नहीं। इसी में लिखा है, सब कुछ।”

पहरेदार ने एक बार फिर उस ऑर्डर को पढ़ा। “हाँ,” उसने कहा, “कल सुबह पाँच बजे।”

वेलायी-अप्पन हैरान रह गये, “अच्छा?”

“बाबा, थोड़ी देर बैठ कर सुस्ता लो।”

वेलायी-अप्पन वहीं, प्रवेश-द्वार के पास पड़े बेंच पर बैठ गये। रात को मेरा बेटा सोया न होगा। बिना सोये, जगा भी न होगा। बिन सोये, बिन जागे वह खायेगा कैसे? उन्होंने चावल की पोटली पर हाथ फेरा। बेटे, तुम्हारी माँ ने मेरे लिये, ये चावल गूंधे थे। अपनी यात्रा में इसे न खाकर, मैं यहाँ ले आया हूँ। तुम्हें भेंट देने के लिए मेरे पास इसके अलावा और कुछ नहीं है।

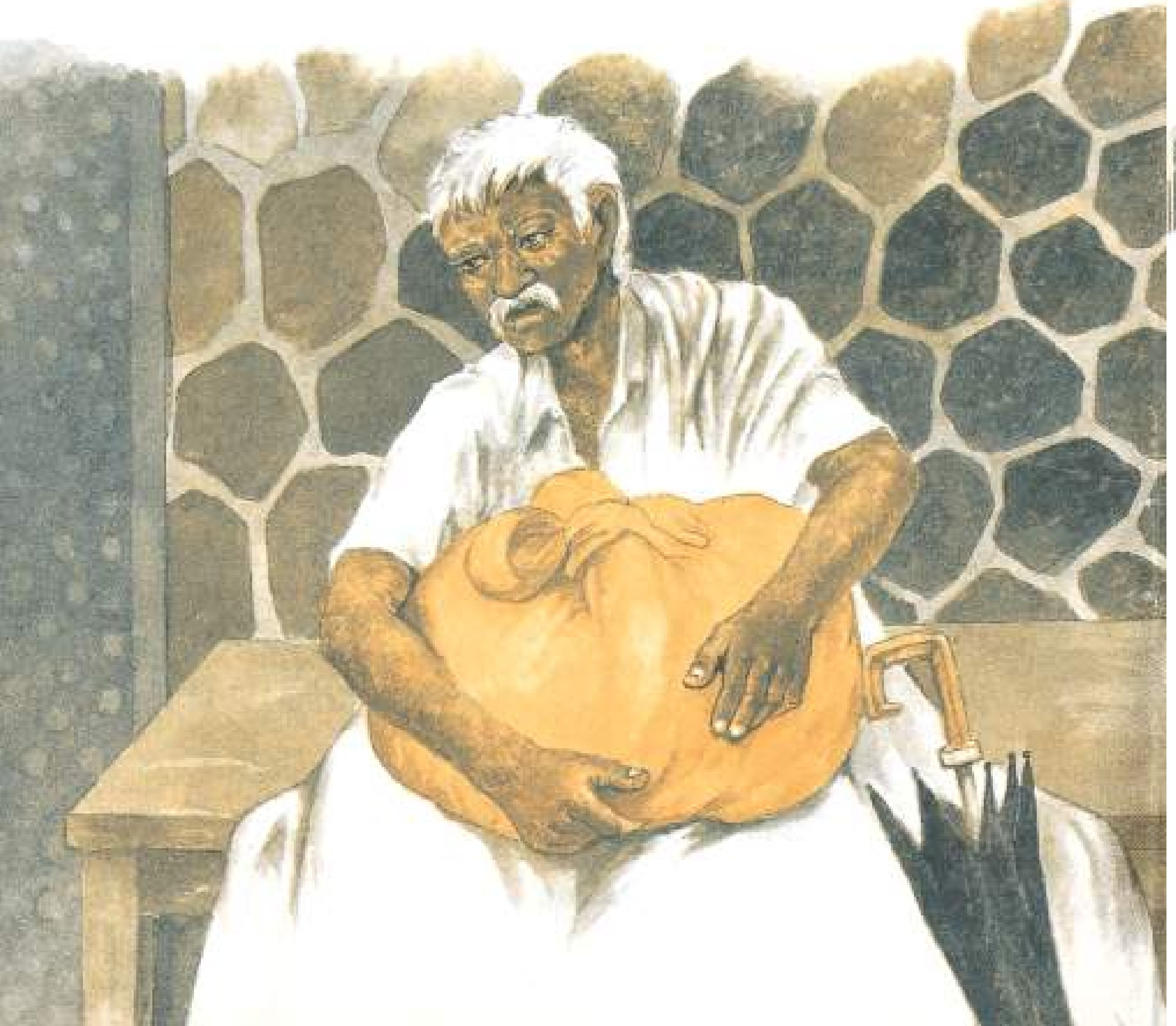

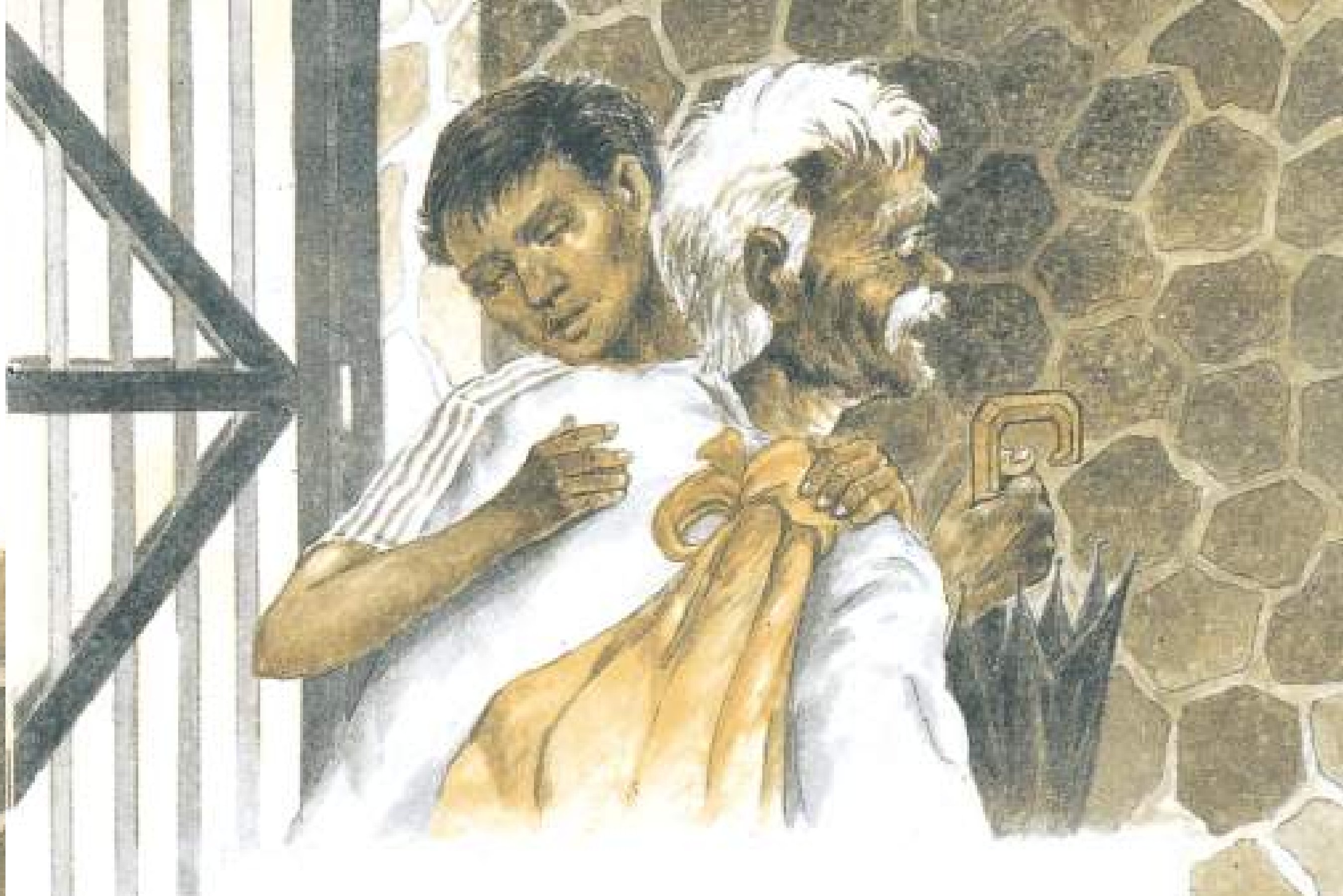

बहुत देर के बाद, एक पहरेदार उन्हें जेल के भीतर ले गया। एक कोठरी की सलाखों के पीछे, कनदुण्णी खड़ा था। पहरेदार ने ताला खोल दिया।

बाप-बेटा एक-दूसरे के सामने खड़े थे, बिल्कुल डरे हुए। वेलायी-अप्पन ने आगे बढ़कर, अपने बेटे को गले से लगा लिया। बोले, "मेरे बेटे।"

"पिताजी," कनदुण्णी बोला।

यही शब्द, बस! बाप-बेटे के दु:ख भरे संवाद!

बेटे, क्या किया था तूने?

मुझे याद नहीं।

क्या तूने खून किया था, मेरे बेटे?

मुझे याद नहीं।

कोई फर्क नहीं पड़ता बेटा, अब कुछ शेष नहीं याद रखने के लिए।

क्या इन पहरेदारों को याद रहेगा?

नहीं, मेरे बेटे।

पिताजी, क्या आपको मेरा दर्द याद रहेगा?

फिर कनदुण्णी ज़ोर से चीखा, पिताजी उन्हें रोकिये। मुझे फाँसी पर चढ़ाने से रोकिये।

तभी कैदी से मिलने का समय समाप्त हो गया।

वेलायी-अप्पन बाहर आ गये। पीछे मुड़कर एक बार अपने बेटे को देखा। कनदुण्णी, सलाखों के पीछे से झाँक रहा था। जैसी चलती रेलगाड़ी से झाँकता हुआ यात्री।

वेलायी-अप्पन, बिना किसी उद्देश्य के जेल के चारों तरफ़ घूमते रहे। सूरज अपनी चरम-सीमा पर पहुँच गया। फिर धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। रात आई।

फिर भोर ...

वेलायी-अप्पन ने पहरेदारों से, अपने बेटे का शव लिया। शहर के बाहर, सुनसान भूमि पर एक गढ्ढा खोदा गया। दफ़नाने से पहले वेलायी-अप्पन ने अंतिम बार अपने बेटे का मुँह देखा। उसके ठंडे माथे पर हाथ रखकर, आशीर्वाद दिया। अंत में गढ्ढे को भरकर, समान कर दिया गया।

वेलायी-अप्पन घूमते हुए, समुद्र तट पर पहुँचे। तभी उन्हें कुछ ठंडी, गीली वस्तु का आभास हुआ। ये वही चावल थे जो उनकी पत्नी ने, यात्रा के लिए गूंधे थे। वेलायी-अप्पन ने पोटली खोली। फिर चावलों को रेत पर बिखेर दिया। मृतात्मा की शांति के लिए ...

शब्द बनायें !

इस कहानी से लिये गये कुछ शब्दों को हमने पदों (मात्रा सहित अक्षरों) में विभाजित करके लिखा है। आप इन पदों को जोड़ कर नये शब्द बनायें। जो सबसे अधिक शब्द लिखेगा, वही विजयी होगा। याद रहे अक्षर से मात्रा अलग न हो। तीनों पंक्तियों में से कहीं से भी पद लेकर शब्द बनाये जा सकते हैं।
हमने दो शब्द आपके लिये बनाये हैं: जैसे (समुद्र, यात्रा)

स	जे	पो
चा	ट	छ
उ	ची	सू
त	फ	ल
ली	न	की
गा	कु	ड़ी
के	मु	त्रा
दीं	व	गी
घे	या	द्र
आँ	र	खा

आपके अंक : • 5 शब्दों से कम : और अभ्यास करे • 5 शब्द : बढ़िया

शब्द खोजें !

नीचे कुछ ऐसे शब्द दिये गये हैं जिनके बीच में एक अन्य शब्द भी छिपा है। कहानी से ऐसे और शब्द खोजें और अन्दर छिपे शब्द को अलग से लिखें।

जैसे : *मैदान* में छिपा है *दान*

रेलगाड़ी	चावल	झाँकता	चरम	पगडंडी	मैदान	बगल	आराम

भावनाओं में डूबी, रिश्तों की गहराइयों को छूती, यह एक पिता के निःस्वार्थ प्यार की कहानी है।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिये !
इस पुस्तक की कहानी मलयालम भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक **ओ.वी. विजयन** ने लिखी है।